# सामान्य हिन्दी पुस्तिका
# VI

*सम्पादक मंडल*

**शामुराइलात्पम लोकेन्द्र शर्मा**

**ब्रह्मचारीमयुम रघुमणि शर्मा**

**बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एड्यूकेशन**

**मणिपुर**

# सचिव का निवेदन

विश्व की बदलती परिस्थितियों, वातावरण और परिवेश के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए यह amï->r` mmR²>Mn© H$s ê$naoIm – 2005 (EZ. gr. EH$, 2005 amï->r` mmR²>`M©n© H$s ê$naoIm, 2000) यह बोर्ड नेसनल करिक्यूलम फ्रेमवार्क-2005 के अनुसार पाठ्य पुस्तकों का निर्माण कराकर प्रकाशित करता आ रहा है। शिक्षा को उच्च स्तर तक उठाना इस बोर्ड की कोशिश रही है।

जो पुस्तकें amï->r` mmR²>`M`n© H$s ê$naoIm – 2000 के अन्तर्गत लिखकर प्रकाशित की गईं, उनको नये amï->r` mmR²>Mn© H$s ê$naoIm – 2005 (EZ. gr. EH$, 2005) के अनुसार संशोधित तथा परिवर्धित कर समयानुकूल बनवाकर प्रकाशित किया जा रहा है। यह भी लक्ष्य रखा गया है कि मणिपुरी वातावरण के साथ उनका संगत हो। इसलिए पूरी सावधानी रखवाकर पुस्तकों को फिर से तैयार करवाकर प्रकाशित किया जा रहा है। लेखकों और परीक्षण-परिमापन करने वालों के साथ बैठकर काफी गहराई तथा विस्तुत रूप से विचार-विमर्श कर पुस्तकों की कमियों और त्रुटियों का परिमार्जन कराकर पुस्तक प्रकाशित की जा रही है।

इस पुस्तक के निर्माण में और छात्रों के द्वारा व्यवहार करवाने में जो समस्याएँ आई उसका समाधान किया गया है। उसके बाद जो परिणाम सामने आए उन कसौटियों पर मैंने लेखकों और सम्बन्धित व्यक्तियों से परामर्श किया है। इस कार्य में लेखकों तथा सम्बन्धित सज्जनों ने जो सहयोग दिया है उसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ।

इस पुस्तक को और भी उत्कृष्ट बनाने के लिए जो भी सुझाव सुधीजनों की तरफ से आएंगे उनका सादर स्वागत किया जाएगा। अत: रचनात्मक सुझाव और परिमार्जन के लिए विद्वज्जन अपना सहयोग प्रदान करें।

इम्फाल
नवम्बर,

— डा. चीथूड. मेरी थोमेस
सचीव

# सम्पादक-द्वय की ओर से

प्रस्तुत पुस्तक ‘सामान्य हिन्दी पुस्तिका’ बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एडूकेशन, मणिपुर द्वारा amï->r` mR²>`Mnm© H$s ê$naoIm – 2005 (EZ. gr. EH$, 2005) के आधार पर तैयार किए गए पाठ्यक्रम के अनुसार छठीं कक्षा के लिए प्रथम भाषा/तृतीय भाषा के पूरक पुस्तक के रूप में तैयार की गई है। इस पुस्तिका में संग्रहीत रचनाओं के चयन करते समय रोचकता, सरलता, स्पष्टता, नीति, राष्ट्रीयता, मानवता, देश-प्रेम, संस्कृति आदि पर विशेष ध्यान दिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों में संकलित रचनाओं के प्रति सहज रुचि उत्पन्न होगी, साथ ही उनके चरित्र-निर्माण में भी सहायता मिलेगी।

प्रत्येक पाठ के अन्त में रचनाओं में आए कठिन शब्दों के अर्थ तथा विद्यार्थियों के विषय-ज्ञान के परीक्षण हेतु अभ्यास के लिए प्रश्न दिए गए हैं। आशा है, अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया में सहायक सिद्ध होंगे।

**– सम्पादक-द्वय**

# सीखने के प्रतिफल

**कक्षा छह** **हिंदी**

**बच्चे –**

- विभिन्न प्रकार की ध्वनियों जैसे - बारिश, हवा, रेल, बस आदि को सुनने और किसी वस्तु के स्वाद आदि के अनुभव को अपने ढंग से मौखिक / सांकेतिक भाषा में प्रस्तुत करते हैं।
- देखी, सुनी (अनुभव की) गई बातों; जैसे- स्थानीय सामाजिक घटनाओं, कार्यक्रमों और गतिविधियों पर बेझिझक बात करते हैं, प्रश्न करते हैं और बातचीत को अपने ढंग से आगे बढ़ाते हैं।
- रेडियो, टी.वी., अखबार, इंटरनेट में देखी / सुनी गई खबरों को अपने शब्दों में कहते हैं।
- विभिन्न अवसरों / संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से बताते हैं / लिखते हैं।
- अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में चर्चा करते हैं।
- अपने से भिन्न भाषा, खान-पान, रहन-सहन संबंधी विविधताओं पर बातचीत करते हैं।
- किसी पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसमें किसी विशेष बिंदु को खोजते हैं, निष्कर्ष निकालते हैं।
- हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (पत्र-पत्रिका, इंटरनेट पर प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उस पर मौखिक / लिखित / ब्रेल / सांकेतिक भाषा में अपनी पसंद-नापसंद, राय, टिप्पणी देते हैं।
- भाषा की बारीकियों / व्यवस्था / ढंग पर ध्यान देते हुए उसकी सराहना करते हैं, जैसे- कविता में लय-तुक, वर्ण-आवृत्ति (छंद) तथा कहानी, निबंध में मुहावरे, लोकोक्ति आदि।
- विभिन्न विधाओं में लिखी गई साहित्यिक सामग्री को उपयुक्त उतार-चढ़ाव और सही गति के साथ पढ़ते हैं।
- हिंदी भाषा में विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़ते हैं।
- नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हैं और उनके अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते हैं।
- विविध कलाओं से जुड़ी सामग्री में प्रयुक्त भाषा के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हुए उसकी सराहना करते हैं।
- दूसरों के द्वारा अभिव्यक्त अनुभवों को ज़रूरत के अनुसार जैसे सार्वजनिक स्थानों (चैपाल, चैराहों, नलों, बस अड्डे आदि) पर सुनी गई बातों को लिखते हैं।
- विभिन्न संदर्भों में विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते समय उपयुक्त विराम चिह्नों, शब्दों, वाक्य संरचनाओं, मुहावरे आदि का उचित प्रयोग करते हैं।

पाठ–एक

# राजा शिवि

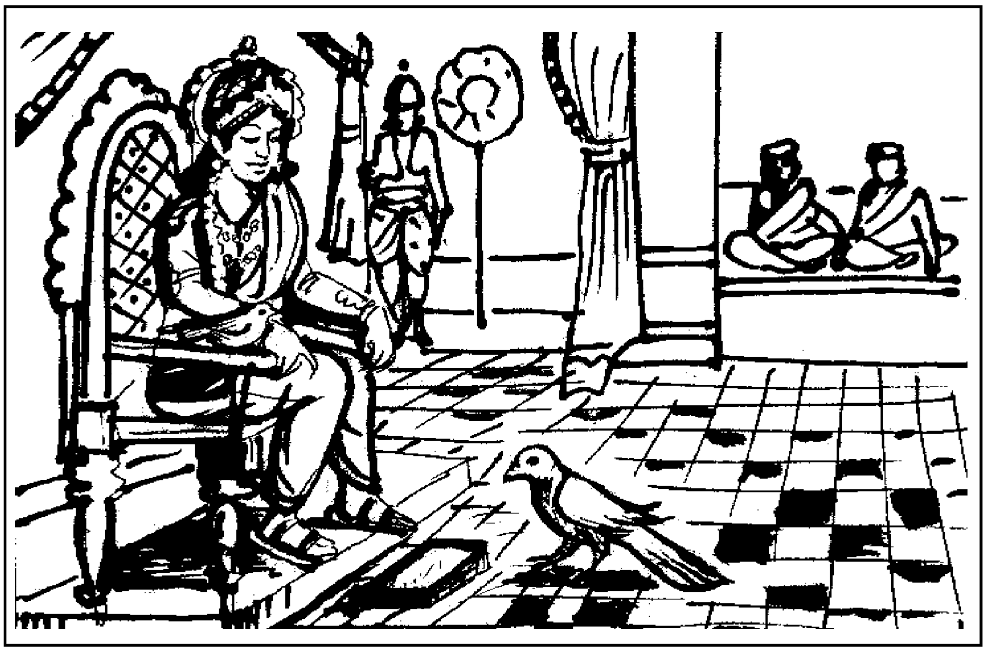

भारत में ऐसे अनेक महापुरुष और राजा-महाराजा जन्म हुए थे जो दान देने में विख्यात हैं। _h{f© दधीचि, राजा हरिश्चन्द्र, इक्ष्वाकुवंशीय राजा नृग, राजा शिवि, दानवीर कर्ण आदि अपने अपने कार्यों के अनुसार दाता के रूप में प्रसिद्ध हुए थे। दान देने में वे कभी सन्देह नहीं हुए थे।

राजा शिवि भारत-भूमि के एक सुप्रसिद्ध राजा थे। देवराज इन्द्र की सभा में देवगण भी दान-धर्म के सम्बन्ध में राजा शिवि का नाम लिए जाते थे। धार्मिक विचार, धर्म पालन, दया तथा गरीबों को दान देना शिवि पर अलंकृत गुण थे। जो कोई उनसे

सभी सभासद इसे देखकर 'हाय, राम' चिल्लाने लगे। तराजू की एक तरफ कबूतर बैठा, दूसरी तरफ राजा का कटा मांस रखा। इस तरह कई बार मांस काट देने से राजा का शरीर कामजोर हो गया। फिर भी कबूतर भारी ही होता रहा। अतं में राजा स्वयं तराजू पर बैठ गए।

राजा का धर्मानुष्ठान देखकर धर्मराज यम तथा देवराज इन्द्र दोनों स्वयं प्रकट हो गए। स्वर्ग से फूल बरसाय गए। राजा का कटा शरीर देखते-देखते भर गया। उन्हें पुन: जीवन प्रदान कर दोनों देवता दानवीर राजा शिवि की प्रशंसा करते हुए अपने-अपने स्थान में वापस चले गए।

## कठिन शब्दों के अर्थ—

विख्यात = प्रसिद्‌ध, मशहूर।

सर्वत्र = सब जगह, हर वक्त।

विराजमान = प्रकाशमान, उपस्थित।

किंकर्त्तव्यविमूढ़ होना = जो यह न समझ सके कि अब क्या करना चाहिए, भौंचक्का, दुविधा।

वजन = भार, बोझ, भार का परिमाण।

तराजू = सामान तौलने हेतु दो पलड़ों का बना एक यंत्र, तुला।

धर्मानुष्ठान = धार्मिक कृत्य।

## पाठ–दो

# ज़ार की बेटी और अज़गर

पुराने समय की बात है। रूस के शहर कोयेव में एक बार कहीं से एक अज़गर आ निकला। उसने वहाँ के हर परिवार से कर के रूप में प्रतिदिन एक-एक सुन्दरी कुमारी को खाने के लिए बारी-बारी से वसूल किया। इस प्रकार वह हर दिन एक-एक सुन्दर कुमारी को खाकर आराम से रहा। ऐसा करते-करते एक बार ज़ार की खूबसूरत बेटी की बारी आई। जार की बेटी अज़गर के पास पहुँची। उसकी सुन्दरता को देखकर अज़गर उसे खाना नहीं चाहा बल्कि उसे अपनी पत्नी बनाना चाहा। अज़गर ने जार की बेटी को नहीं खाया और उसे अपने वहाँ सुरक्षित रखा। अज़गर ने उसे उसकी पत्नी बनने का प्रस्ताव रखा तो उस कुमारी ने अज़गर की बातों को किसी भी बहाने से टाल रखा।

ज़ार की बेटी ने एक कुत्ता पाल रखा। उसने कुत्ते को बहुत प्यार से खिलाया और पिलाया। कुत्ता भी सदा अपनी मालिकन के पास से एक क्षण भी कहीं नहीं जाता था। वह हर समय अपनी मालकिन की देख-रेख और भलाई के काम में लगा रहा था। जार की बेटी ने एक पत्र लिखा। वह पत्र उस कुत्ते के जरिए अपने माँ-बाप की पास पहुँचा दिया। पत्र पाते ही जार को सब कुछ पता चल गया। उसने योजनाएँ बनाईं और आदेश दिया – '' अपने देश के शक्तिशाली और ताकतवर पुरुष राज सभा में हाजिर हो जाय।''

अज़गर ने ज़ार की बेटी को बहुत सुरक्षित रखा। जब कभी वह बाहर जाता तो अपनी खोह के मुँह को लट्ठों से बन्द करके जाता था ताकि ज़ार की पुत्री वहाँ से कहीं भाग न जाए।

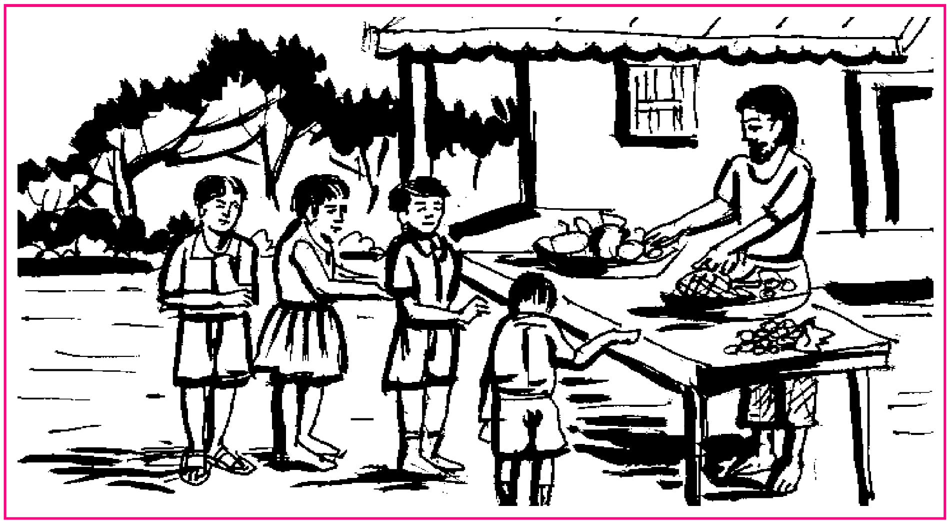

निकीता ने अज़गर की खोह में जाकर युद्ध के लिए ललकारा। उसकी ललकार सुनकर अज़गर खोह के बाहर निकला। उन दोनों के बीच काफी देर तक भयानक द्वंद्व होता रहा। आखिर अज़गर हार गया। उन दोनों में क्षेत्र बाँटने का करार हुआ। निकीता ने लकड़ी का एक भारी हल लेकर कोयेव से कस्पीयन सागर तक एक रेखा खींची। उन दोनों के बीच जमीन के बँटवारा होने के बाद निकीता ने अज़गर से फिर कहा – '' हम दोनों के बीच जमीन का बँटवारा तो हो गया, अब सागर का भी बँटवारा होना चाहिए।'' निकीता की बात अज़गर ने स्वीकार की।

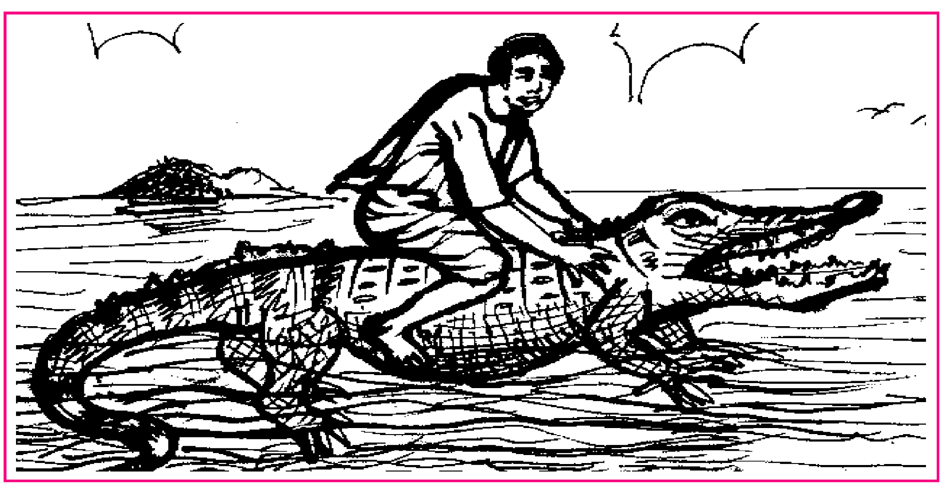

## प्रश्न-अभ्यास

1. अज़गर ने जार की पुत्री को क्यों नहीं खाया ?
2. ज़ार की बेटी ने पत्र अपने माँ-बाप तक कैसे पहुँचाया और ज़ार ने क्या किया ?
3. ज़ार की पुत्री ने अज़गर की मृत्यु होने का रहस्य कैसे जाना और वह रहस्य क्या था ?
4. अज़गर को किसने मारा और क्यों ?
5. अजगर की मृत्यु कैसी हुई ?
6. 'ज़ार की बेटी और अज़गर' पाठ का सारांश लिखिए।
7. 'ज़ार' के सम्बन्ध में अपने अध्यापक से विशेष जानकारी प्राप्त करके उसके बारे में पाँच वाक्य लिखिए।
8. ज़ार की पुत्री के बारे में आपके क्या विचार है ? लिखिए।
9. इस पाठ से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?
10. क्या आप सहमत है कि ज़ार की बेटी एक कुशल और साहसी नारी थी ?

* * * * *

वक्त को एक गड़रिया का काम करके बीता। इस दौरान उसने दुखों को बहुत करीब से देखा। करोबार के लिए उसने अपने चाचा के साथ, सीरिया, दामस्कस, बागदाद घूम आया और वहाँ का हाल भी देख आया। रास्ते पर डाकुओं द्वारा किए लूट-पाट, झूठ-फरेब, कत्ल और बेमजहबी कामों को देखकर उसे असीम दुख हुआ।

उस समय अरब में एक नेक और ईमानदार विधवा रहती थी। उसका नाम था खादिजा । एक विधवा होकर भी वह कुदरत के दबाव में आकर ऐसा कोई भी कार्य नहीं करती थी जो मज़हब के विरुद्ध हो। हज़रत बहुत ईमानदार था, हर काम उसने ईमानदारी से किया। उसकी ईमानदारी को देखकर लोग उसे 'अल-ईमान' कहने लगे। खादिजा ने उसको अपने नौकर के रूप में रखा। शुरू से ही हज़रत स्वभाव में न्यायप्रिय था। एक बार काबा की मस्जिद में एक पत्थर की स्थापना को लेकर कई फिरकों के बीच झगड़ा होने लगा। सब लोग अपने अपने नेताओं को वह पवित्र पत्थर रखवाने की कोशिश कर रहे थे। इसकी वजह से वहाँ दंगा होने की सम्भावना हो रही थी। अगर दंगा हुआ तो बहुत लोग मारे जाते। मगर ऐसा

कहा और उसे मौत की सजा देने की माँग की। मक्का के लोगों ने महम्मद को बहुत तंग किया जिससे बरदास्त न होकर वह भाग चला गया। कई सालों के बाद वह फ़ौजी बनकर मक्का में फिर वापस आया।

अरब पहले की तरह दंगाबाजी और कतलबाजी जगह नहीं हुई। महम्मद ने मक्का में रहकर दुनिया को चौंकानेवाला काम किया। उसने इस्लाम मजहब के जरिए अरब को शान्ति की जगह बना दी। उसके उपदेश थे – " देश की नारियों को माता तथा बहन समझो, उनकी इज्जत करो, धन की लेन-देन में ब्याज लेना बुरा है, सब इन्सान एक खुदा की औलाद है, हर इन्सान से प्यार करो तो खुदा भी तुमसे प्यार करेगा।" उसके सभी उपदेश इस्लाम धर्म का पवित्र ग्रन्थ 'कुरान' में लिखा पाया है।

## कठिन शब्दों के अर्थ—

मासूम = निरपराध, बेगुनाह, पापरहित।

गड़रिया = भेढ़-बकरियाँ चरानेवाला।

कारोबार = कार्य-व्यापार।

बेमजहबी = अधार्मिक।

नेक = अच्छा, उम्दा, भला।

कुदरत = ईश्वर की शक्ति, प्रकृति।

फ़िरकों में = समुदायों में।

दंगा = मार-पीट, लड़ाई-झगड़ा, उपद्रव।

काफिर = इस्लाम धर्म को न माननेवाला।

इलज़ाम = दोष, आरोप, अभियोग।

बरदास्त = सहन करने की शक्ति।

## पाठ–चार

# दया तथा त्याग की मूर्ति ''नरसिंह महाराज''

नरसिंह महाराज

गम्भीरसिंह महाराज

इतिहास साक्षी है कि राज परिवार में तथा राजमहलों में राजसिंहासन की लालच से पुत्र पिता के और भाई भाई के विरुद्ध लड़ाई करते थे। विश्व के इतिहास में ऐसी घटनाओं की कोई कमी नहीं थीं। उनके मन में पाप-पुण्य का कोई विचार नहीं था। पुत्र पिता को भाई भाई को मार कर सिंहासन हासिल करने की कोशिश सदा करते रहते थे। लेकिन इसके ठीक विपरीत दया, त्याग और प्रेम से भरा हुआ दिल और आत्मीयता प्रकट कर सकनेवाले कई राजकुमार भी हुए थे। श्री रामचन्द्र ने अपने पिता के वचन-पालन के लिए तथा भीष्म पितामह ने अपने पिता शान्तनु के लिए सिंहासन त्याग दिया। उसी प्रकार

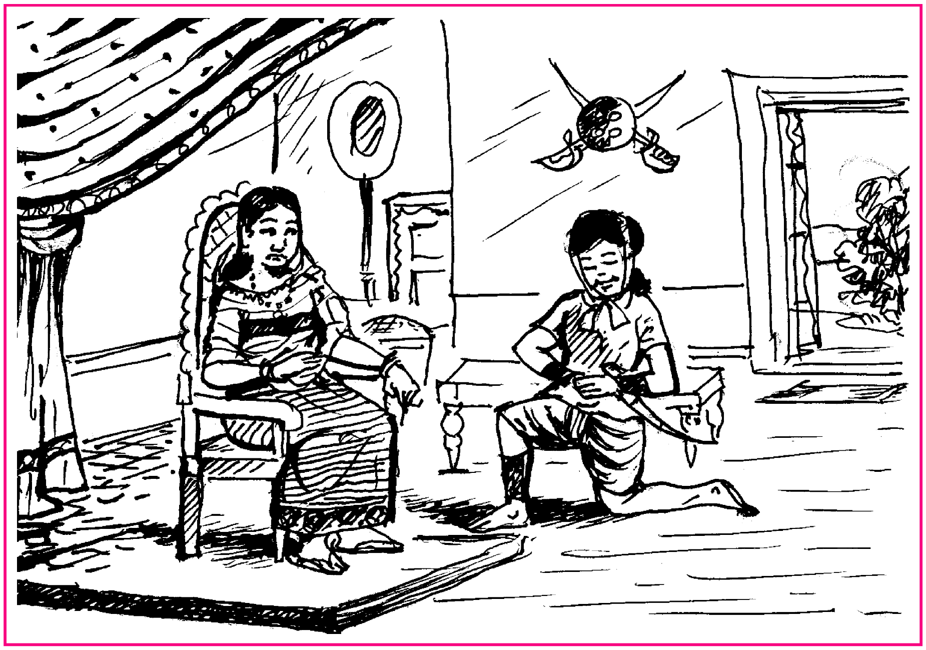

चन्द्रकीर्ति की माता कुमुदिनी भी एक नारी थी। नारी हृदय होने के नाते वह नरसिंह के कार्यों में शंका और ईर्ष्या होने लगी। उसने नरसिंह को कतल कराने का ष< T>>यंत्र रचना शुरू किया। इसकी भनक पाते ही नरसिंह मणिपुर के बाहर चला गया। मणिपुर के बाहर रहकर भी उसने चन्द्रकीर्ति की सुरक्षा के लिए चुपचाप काम किया। कालान्तर में राजद्रोहियों तथा ष< T>यंत्रकारियों को पकड़ लिया गया, उनको मृत्यु दण्ड नहीं देकर केवल समझा-बुझाकर छोड़ दिया। ऐसे ही त्यागी के गुणयुक्त पुरुष था नरसिंह।

महारानी कुमुदिनी के इशारे से नवीन ने नरसिंह को कतल करने के लिए तलवार से वार किया। नरसिंह तो नहीं मरा, उनकी बाईं भूजा पर मामूली चोट लगी। ऐसे जान लेने की कोशिश किसी अन्य राजकीय व्यक्ति के साथ हुआ तो नवीन को जीवित नहीं छोड़ता। नरसिंह ने उसे अभयदान देकर मणिपुर के बाहर किसी अन्य स्थान में जाने को कहा। युवराज नर सिंह तथा जनता के भय से राजमाता कुमुदिनी चन्द्रकीर्ति महाराज को लेकर भाग गई। तब भी नरसिंह ने राजा बनने का विचार नहीं किया। उसने पत्र द्‌वारा राजमाता को अपने पुत्र के साथ तुरन्त वापस आने की प्रार्थना की।

| | | |
|---|---|---|
| तड़पा-तड़पा कर | = | अत्यधिक कष्ट पहुँचा कर। |
| आत्म समर्पण | = | अपने को सौंपा देना, हथियार डाल देना। |
| सादगी | = | सादापन, सरलता, भोलेपन। |
| कलह | = | लड़ाई-झगड़ा, युद्ध। |
| षड्यंत्र | = | साजिश, दुरभिसंधि। |
| भनक | = | उड़ती खबर, मन्द ध्वनि। |
| कालांतर | = | अपने समय के बाद होनेवाला, अन्य समय, अंतराल, नियत समय के बाद का समय। |
| इशारे से | = | संकेत से। |
| राजकीय | = | राज्य संबंधी, राज्य का। |
| अभयदान | = | भय से रक्षा का वचन देना, शरण देना। |
| बागडोर | = | लगाम में बाँधी जानेवाली रस्सी। |

## प्रश्न-अभ्यास

1. इतिहास किस बात का साक्षी है ?
2. नरसिंह और गंभीर सिंह दोनों भाइयों के आदर्श गुण क्या-क्या थे ?
3. राजर्षि भाग्यचन्द्र के बाद हुई मणिपुर की अवस्था संक्षेप में लिखिए।
4. नरसिंह ने क्या-क्या त्याग दिए ?

## पाठ–पाँच

# सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण (लोक कथा)

हिन्दुओं में एक प्रचलित कथा चली आई है कि सूर्य और चन्द्र में ग्रहण लगना राहु नामक एक असुर के प्रभाव से होता है। यह पौराणिक कथा श्रीमद्‌भागवत के अष्टम स्कन्ध के नवाँ अध्याय से सम्बन्धित है। लेकिन इस सम्बन्ध में कोम जाति का भी अपना एक अलग विश्वास है। इस विश्वास से संबंधित कथा इस प्रकार है।

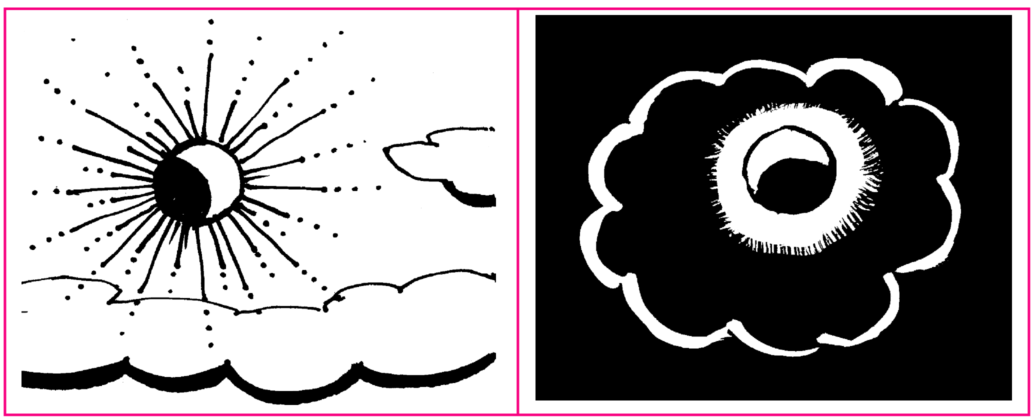

पुराने समय की बात है। किसी एक परिवार में सात भाई रहते थे। एक दिन वे जंगल में काम करने गए । सब से छोटे भाई पर खाना बनाने का काम सौंपकर शेष छह भाई जंगल साफ करने गए। छोटा भाई एक पेड़ के नीचे बैठकर थोड़ा आराम H$a ahm Wm। तब उसके भाइयों ने एक अज़गर को पकड़ा और उसे पकाने के लिए कहकर फिर काम पर लौट गए। छोटे भाई ने अज़गर के सात टूकड़े किए और एक बर्तन में पकाने लगा। उस बर्तन से इतनी भाप निकली कि पेड़ से एक पत्ता टूट कर बर्तन में गिर गया। जब बर्तन में पत्ता गिरा तब अज़गर जीवित होकर उस बर्तन से निकल कर चला गया।

जीवित हो गई। वहाँ के सब लोग बहुत खुश हुए। उस युवती का विवाह उससे कर दिया गया। बाद में छोटा भाई अपनी पत्नी के साथ अपना घर आया।

छोटे भाई की पत्नी उस पेड़ की छाल के गुण और शक्ति नहीं जानती थी। एक दिन जब उसके पति खेत में काम करने गए तब उसने छाल निकाल कर धूप में सूखा दी। उस छाल के गुण अनुपम है। सूर्य और चन्द्रमा दोनों शीघ्र ही पृथ्वी पर उतर आए और उन्होंने उस छाल को ले जाने का प्रयत्न किया। कुत्ते ने उसे देखा और जोर-जोर से भौंका। सूर्य और चन्द्रमा ने छाल और कुत्ता दोनों को पृथ्वी से उठाकर ले गया।

छोटा भाई खेत से घर वापस आया। छाल और कुत्ता दोनों H$mo वहाँ अपने घर में न पाने से उसे बड़ा दुख हुआ। स्वर्ग में कुत्ते ने अपने मालिक की दुखी अवस्था देखी तो वह भी बहुत दुखी हुआ।

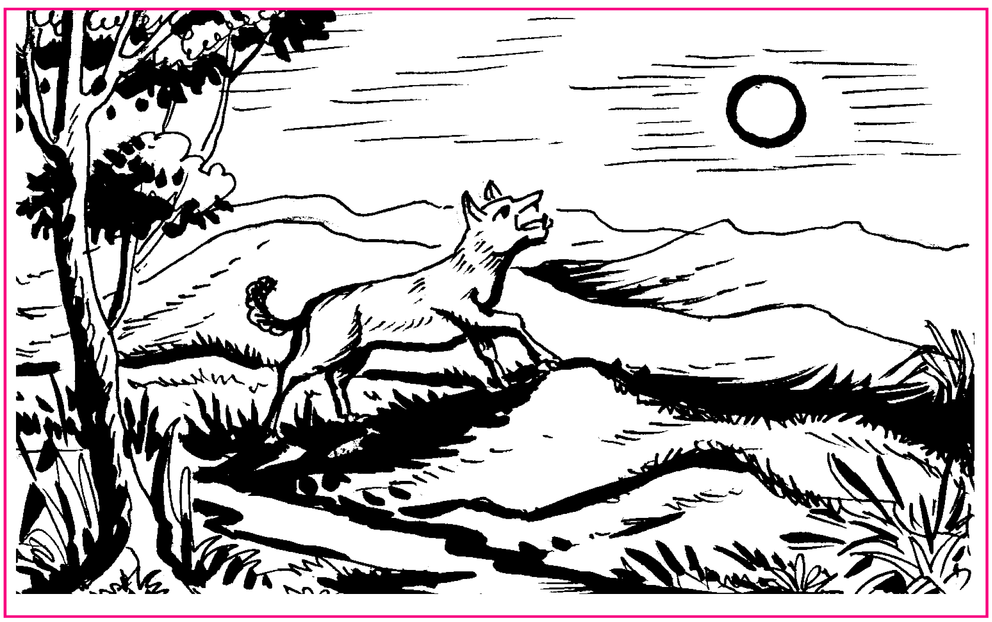

अपने मालिक की दुखी अवस्था देख कर कुत्ता बहुत नाराज हुआ और असह्य होकर सूर्य और चन्द्रमा पर झपटा। जब कुत्ता सूर्य पर झपटा तो सूर्यग्रहण होता है और इसी तरह चन्द्रमा पर झपटा है तो चन्द्रग्रहण होता है। इसी प्रकार सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण के रूप में पृथ्वी पर रहनेवाले मनुष्यों को दिखाई देता है।

## पाठ–छह

# त्रिपुरा और मणिपुर का प्राचीन सम्बन्ध: एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण

त्रिपुरा बहुत ही प्राचीन राज्य है। एक समय था; वहाँ के लोगों में इतिहास लिख कर रखने की आदी नहीं थी। फिर भी जनश्रुति के आधार पर त्रिपुरा की सीमा काफी लम्बी-चौड़ी थी। प्राचीन त्रिपुरा के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें 'राजमाला' नामक ग्रंथ खोल कर देखना पड़ता है। इस ग्रंथ में त्रिपुरा का ऐतिहासिक विवरण काव्यात्मक शैली में लिखा हुआ है।

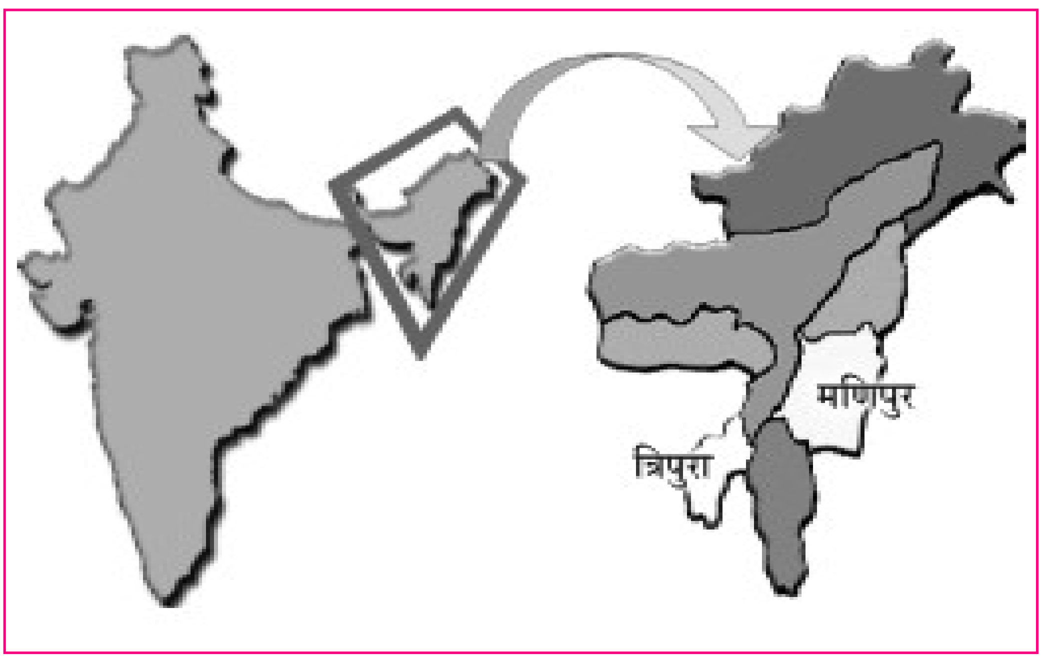

में एक नया अध्याय शुरू हुआ। सन् 1709 को गरीबनिवाज महाराज सिंहासन पर बैठे। उसने बरमा पर चढ़ाई करके अपने पिता के प्रति किये कार्यों का प्रतिशोध लिया और अपने पिता की इच्छा पूरी कर दी। उनके राज काल से मणिपुर में हिन्दू धर्म का आना प्रारम्भ हुआ।

त्रिपुरा और मणिपुर का संबंध बहुत ही पुराने समय से होता आया है। 'राजमाला' में उल्लेख है कि मणिपुर के राजा की पुत्री का विवाह त्रिपुरा के राजा तैदक्षिण के साथ सम्पन्न हुआ। त्रिपुरा के राजा माणिक्य ने (सन् 1785-1806) मणिपुर की राजकन्या के साथ विवाह करके दोनों राज्यों का संबंध और मज़बूत किया। दोनों राज्यों के इतिहास में सब कुछ दर्ज है, साथ ही इन दोनों राज्यों के बीच हुए संघर्ष का भी उसमें उल्लेख है।

त्रिपुरा के राजा द्वितीय धर्म माणिक्य के समय मुगलों ने आक्रमण कर के घाटी के कुछ भाग अपने कब्जे में कर लिया। इसके बाद राज परिवार में सिंहासन को लेकर आपसी संघर्ष हुआ। त्रिपुरा की इस असंतुलित अवस्था के मौके का फायदा उठाकर मणिपुर के राजा गरीबनिवाज (पामहैबा) ने त्रिपुरा पर चढ़ाई की। उन्होंने त्रिपुरा की फ़ौजों को हराकर दक्षिणी भाग अपने कब्जे में ले लिया। इससे राजा गरीबनिवाज का नाम 'तखेलङम्बा' पड़ गया।

त्रिपुरा के राजाओं ने मणिपुर की राज कन्याओं से विवाह करके दोनों राज्यों का सम्पर्क और मज़बूत किया। राजर्षि भाग्यचन्द्र की सुपुत्री रासेश्वरी को दिया हुआ राधामाधव का विग्रह आज तक आगरतला के amYmZ_B Ho$ एक मन्दिर में स्थापित है। इस प्रकार दोनों राज्यों के राज परिवार में वैवाहिक सम्बन्ध बहुत लम्बे समय तक चलता रहा। दोनों राज्यों के बीच हुए संबंध के साक्षी स्वरूप भूमि, सामग्री तथा मैतै परिवार आज तक त्रिपुरा में मौज़ूद हैं।

3. मैतै लोगों ने त्रिपुरा को किस नाम से पुकारा ?
4. 'तखेलङम्बा' कौन थे ? उन्हें तखेलङम्बा क्यों कहा गया ?
5. पुराने समय में मणिपुर और त्रिपुरा दोनों राज्यों के बीच संबंध स्थापित करने की मुख्य नीति क्या थी ?
6. प्राचीन काल में मणिपुर और त्रिपुरा दोनों राज्यों के बीच हुए सम्बन्धों को संक्षेप में लिखिए।
7. त्रिपुरा राज्य का एक नक्शा खींच कर उसमें राजधानी आगरतला निर्धारित कीजिए।
8. त्रिपुरा राज्य से संबंधित पुस्तकें पढ़कर उस राज्य के बारे में दस वाक्य लिखिए।
9. त्रिपुरा में रहनेवाले मणिपुरियों के बारे में अपने गुरुजनों से जानकारी प्राप्त कीजिए और उसे कक्षा में सुनाइए।

* * * * *

वे बचपन से ही संघर्ष में दिलचस्पी लेते थे। वे मृत्य से डरV○ नहीं थे। इन गुणों को देखकर महाराज गंभीर सिंह ने उन्हें सूबेदार के पद में नियुक्त किया। उन्होंने राज्य के विकास के बहुत काम किए। उन्होंने राज्य की राजनैतिक स्थिति का खूब अध्ययन किया। उन्होंने राज्य की शक्ति बढ़ाने के लिए विशेष नियम बनाए। उस समय राज्य का कानून बनाना और किसी गंभीर विषय पर विचार करना केवल राजदरबार में ही किया जाता था। उनका राजनीति संबंधी अनुभव इतना गहरा था कि कभी देश की संकटकालीन अवस्था में उनकी बात महाराजा तक मानते थे। अवस्थानुसार उनकी सलाह को सब दरबारी महत्व देते थे।

राजा चन्द्रकीर्ति जब कछार में थे तब थांगाल भी उनके साथ थे। महाराज को थांगाल की रणनीति में कुशल होना तथा सेनानायक होने का परिचय ज्ञात हुआ। इसलिए चन्द्रकीर्ति महाराज ने उनको 'जनरल' की उपाधि से विभूषित किया। राज परिवार के सभी लोग उनका सम्मान करते थे। जब कुलचन्द्र मणिपुर के राजा हुए तब कुलचन्द्र और युवराज टिकेन्द्रजीत दोनों ने शासन सम्बन्धी कार्यों में थांगाल जनरल की सलाह ली थी।

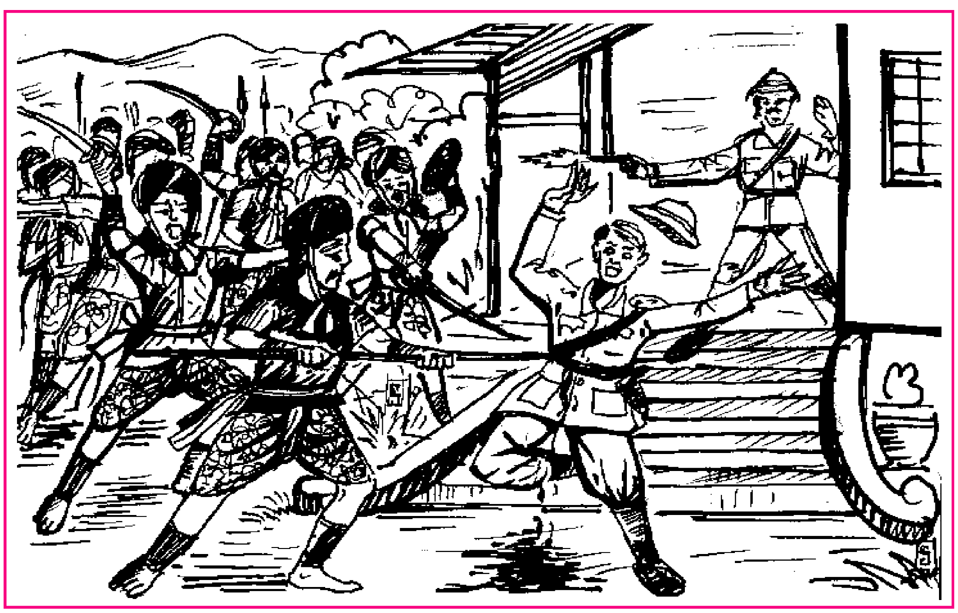

मणिपुरी जनता द्वारा अंग्रेजों के मारे जाने से अंग्रेज सरकार आग बबूला हो गई। उस घटना से अंग्रेज सरकार को मणिपुर पर आक्रमण करने का मौका मिल गया। उन्होंने बरमा(वर्तमान म्यान्मार), कोहिमा और कछार की तरफ से आक्रमण किया। थांगाल ने पूरी रण-कौशल, कूटनीति और बड़े सूझ-बूझ के साथ अंग्रेजों का सामना किया। परन्तु विशाल अंग्रेज सेना तथा शक्तिशाली हथियारों के सामने अल्प-संख्यक मणिपुरी सेना बहुत दिनों तक नहीं टिक पाई। फिर भी मणिपुर के देशभक्त वीरों ने अन्तिम साँस तक शत्रुओं का सामना किया। आखिर युवराज टिकेन्द्रजीत और जनरल थांगाल को अंग्रेजों ने बंदी बना लिया। 13 अगस्त 1891 के दिन H$mo युवराज टिकेन्द्रजीत और राजनीतिज्ञ वीर योद्धा थांगाल को फाँसी पर लटका दिया। इस दिन को राज्य सरकार ‘‘ देशभक्त दिवस ’’ के नाम से राज्यस्तर पर पालन कर रही है।

## कठिन शब्दों के अर्थ—

| | | |
|---|---|---|
| दिलचस्पी | = | शौक, मनोरंजकता। |
| नियुक्त H$aZm | = | नियोजन H$aZm, prWa H$aZm। |
| कानून | = | विधान, विधि, राज नियम। |
| गंभीर | = | गहरा, ऊँची और भारी, जटिल। |
| अनुभव | = | प्रत्यक्षज्ञान, AZw^y{V, ^moJZm। |
| गहरा | = | गंभीर, जिसकी थाह बहुत नीचे हो। |
| विभूषित H$aZm | = | अलंकृत H$aZm, शोभित H$aZm, gå_m{ZV H$aZm |
| निभाते रहते थे | = | निर्वाह करते रहते थे, पालन करते रहते थे। |
| राजाज्ञा | = | राजा की आज्ञा, राज्य का आदेश। |
| हित के लिए | = | भलाई/उपकार/लाभ के लिए। |
| *doe^क्त* | = | Xoeà_r |

## पाठ–आठ

# सर सैदय अहम्मद

सर सैयद अहम्मद केवल भारत के नहीं वरन् सारे विश्व के मुसलमान परिवारों के लिए मर्यादा का बुत है। ऐसे इन्सान के पैदा होने से भारत के लिए तो चार चाँद लग गए। वह अपने माँ-बाप के प्रति यक़ीन रखता था और अपने वतन पर विश्वास के साथ चाहत रखता था। अपने कौम पर प्यार कर काम करने वाला व्यक्ति के साथ चाहत रखता था। अपने कौम पर प्यार कर काम करनेवाला व्यक्ति हिन्दुस्तान में एक मिसाल जैसा था। CZH$m OÝ_ दिल्ली शहर में सन् 1817 को पैदा हुआ था। उस समय मुसलमान परिवारों में शिक्षा प्राप्त करनेवाले व्यक्ति बहुत कम थे।

साहित्य के अलावा विज्ञान, गणित और राजनीति विषयmo H$mo भी पढ़ाने का इन्तज़ाम किया। उसके द्‌वारा किए गए काम को देखकर मुसलमान के कुछ मजहबियों ने उसके खिलाफ आवाजें उठाईं। उन मज़हबियों का कहना था – '' मुसलमानों के लिए तो कुरान नमाजों के अलवा कोई दूसरी तालिम ही नहीं हो सकती थी क्योंकि कुरान के अलावा किसी पर यक़ीन नहीं करते थे।'' वे लोग सर सैयद को नफ़रत की निगाह से देखते थे। उनको अपनी जान के खतरे भी आए थे। फिर भी वह अपने कामों से मुँह नहीं मोड़ता था। बाद में उसको सार सेलाट जंग, हायदरबाद के निजाम, रामपुर के नवाब आदि मुसलमान विद्‌वानों ने शराफ़त से उसकी मदद करना शुरू की। पटियाला के महाराज तथा अन्य हिन्दू नेताओं ने सर सैयद अहम्मद की उन क्रियाओं की भरसक प्रशंसा की।

CÝhmoZo उत्तर प्रदेश के अलिगढ़ में अपनी पसन्द के 'आलिगढ़ कॉलेज' की स्थापना की।

सरकार ने उनके परिश्रम, त्याग और कोशिशों को नजर में रखते हुए उनको सन् 1866 में एक भव्य सभा के बीच शिक्षा व्यवस्थापक का पद CZHo$ हवाले किया और के.सी.एस.आई. की ख़िताब भी हासिल की।

## कठिन शब्दों के अर्थ—

बुत = मूर्ति

चार चाँद लग जाना = शोभा वृद्धि H$aZm।

यक़ीन = विश्वास, ^amogm।

कौम = जाति।

मिसाल = उदाहरण।

## प्रश्न-अभ्यास

1. किसके पैदा होने से भारत को चार चाँद लग गए ?
   वह कहाँ और कब पैदा हुआ था ?
2. किस वजह से सर सैयद अहम्मद को क्रान्तिकारियों ने जानासे मारने की कोशिश की थी ?
3. सर सैयद अहम्मद के समय भारत के मुसलमानों की स्थिति क्यों नाज़ुक थी ?
4. शिक्षा के संबंध में मुसलमानों के विचार व्यक्त कीजिए।
5. सर सैयद अहमद ने कौन-सी पुस्तक लिखी ? उस पुस्तक से उनको क्या फायदा मिला ?
6. मज़हबियों ने सर सैयद अहम्मद को नफ़रत की निगाहों से क्यों देखा ?
7. सर सैयद अहम्मद की जीवनी संक्षेप में लिखिए।
8. सर सैयद अहम्मद ने कौन -सी ख़िताब हासिल की ?
   मणिपुर के किस सज्जन को वही ख़िताब प्रदान {H$`m hþAm h¡ ?

* * * * *

# राष्ट्रगान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंग,
विंध्य-हिमाचल, जमुना-गंगा
उच्छल जलधि-तरंग,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा।
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।